भगवान ऋषभदेव

इस अवसर्पिणी काल के आदि युग की यह कहानी है। जब मनुष्य की इच्छाएँ कम थीं। सत्य, सदाचारमय, सन्तोषी प्रवृत्ति के कारण सभी मनुष्य सुखी थे, न कोई राजा न कोई प्रजा। सब समान थे। कल्पवृक्षों* से मनचाही वस्तुएं मिल जाती थीं। इसलिए न कहीं संघर्ष था, न कहीं अशान्ति।

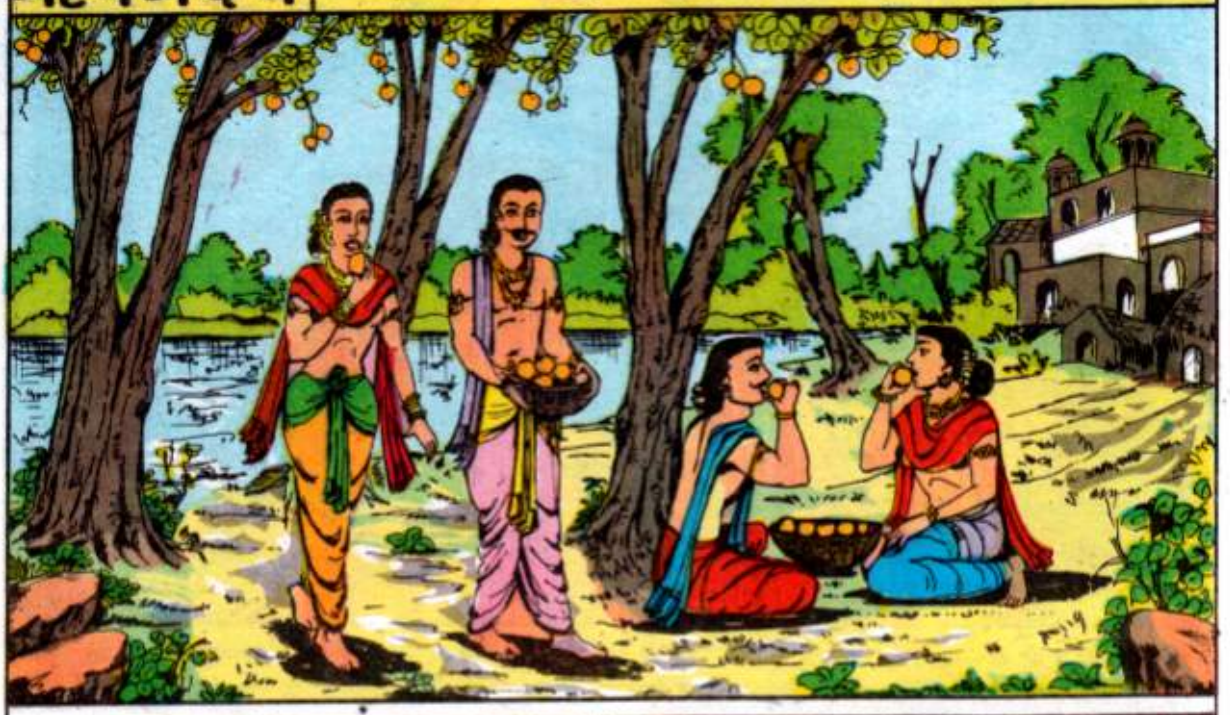

धीरे-धीरे जनसंख्या बढ़ने लगी। कल्पवृक्षों से फल कम मिलने लगे। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ गईं। फलस्वरूप छीना झपटी बढ़ी तो संघर्ष की चिनगारियाँ उठने लगीं।

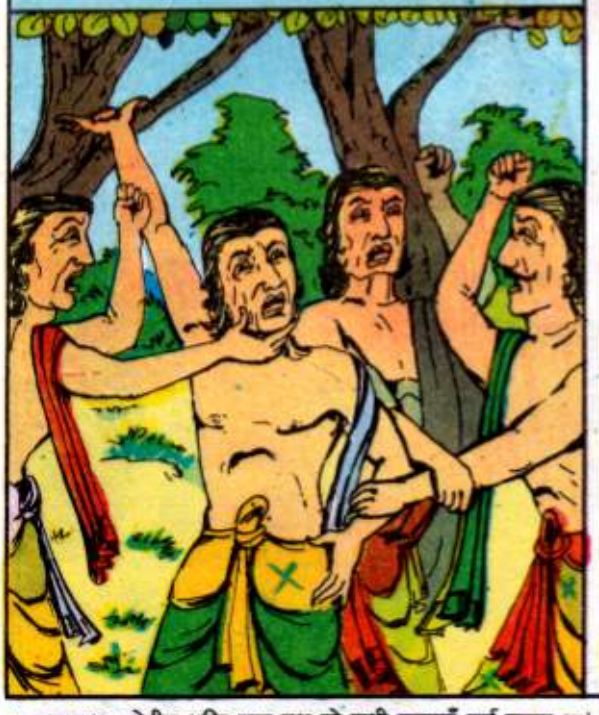

तब मनुष्यों ने आपसी संघर्ष को मिटाकर सबको अनुशासित रखने के लिए अपने में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति, नाभि राय को अपने कुल का मुखिया (कुलकर) नेता चुन लिया।

* कल्पवृक्ष : देवीय शक्ति युक्त वृक्ष जो सभी इच्छाएँ पूर्ण करता था।

नाभिराय की रानी थी—मरुदेवी। आषाढ़ कृष्णा चौथ की शान्त रात्रि में महारानी मरुदेवी ने शयनकक्ष में सोते समय १४ विलक्षण और महत्वपूर्ण स्वप्न देखे। शुभ स्वप्न देखकर वे जाग उठीं और नाभिराय के पास आकर बोलीं।

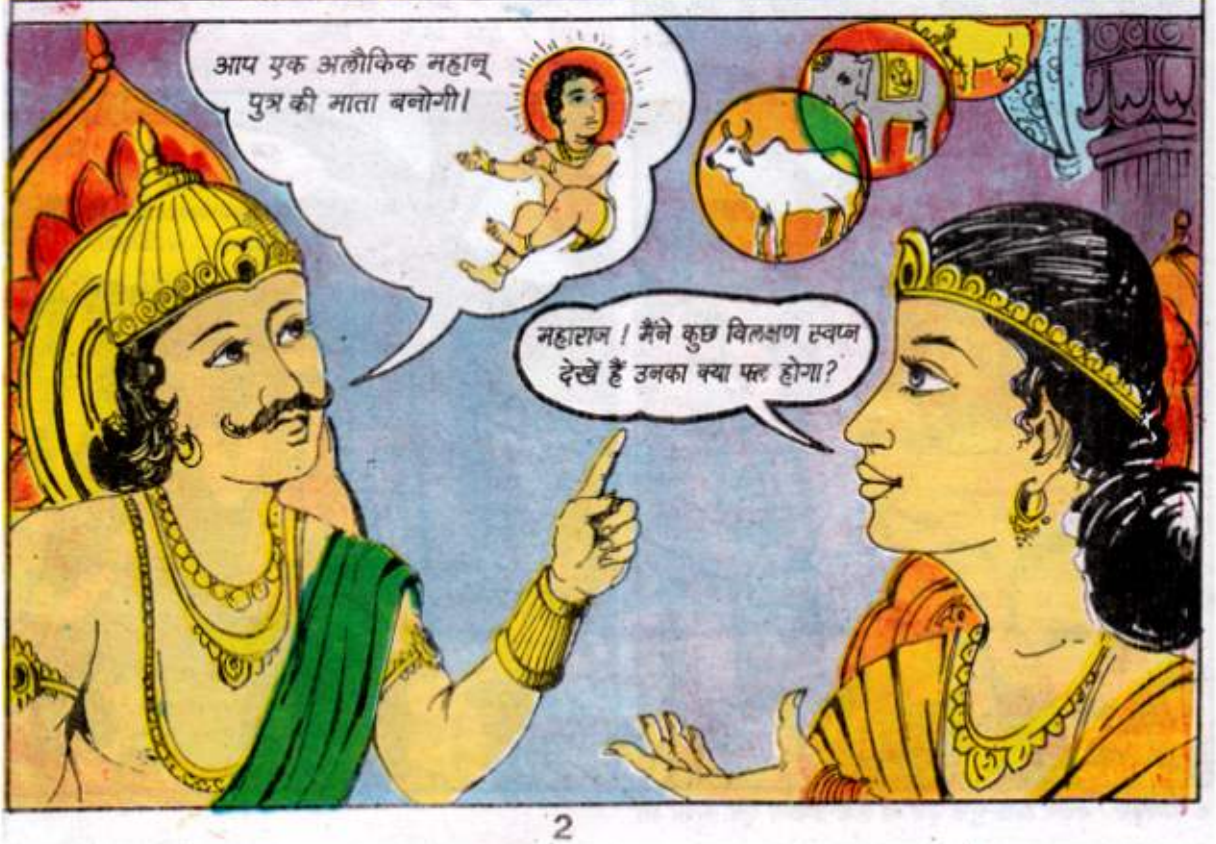

चैत्र वदी अष्टमी की मध्य रात्रि के शुभ समय में माता मरुदेवा ने एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। पुत्र जन्म होते ही समूची पृथ्वी पर क्षणभर के लिए प्रकाश फैल गया। देव और मनुष्य, पशु, पक्षी सभी आनन्द का अनुभव करने लगे। मनुष्यों तथा देवों ने मिलकर भाग्यशाली पुत्र का "जन्म-कल्याणक" (महोत्सव) मनाया।

नाभिराय ने अपने पुत्र का नामकरण किया।

हमारे बालक की छाति पर वृषभ का चिह्न है। इसलिए इसका नाम ऋषभ रखा जाये।